वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'

जन्म : 1911 ई० (जेठ पूर्णिमा)

मृत्यु : 1998 ई०

जन्म-स्थान : तरौनी, दरभंगा

कृति : **मैथिली** : कविता संग्रह- 'चित्रा' ओ 'पत्रहीन नग्न गाछ' उपन्यास-'पारो', 'नवतुरिया' 'बलचनमा', कथा- 'पृथ्वी ते पात्रं' आदि

हिन्दी : कविता संग्रह- युगधारा, सतरंग, पंखोवाली प्यासी पथराई आँखें, तुमने कहा था, हजार-हजार बाहों बाली, रत्न गर्भा आदि।

उपन्यास : 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'नई पौध', 'बाबा बटेसरनाथ', 'कुम्भीपाक', 'उग्रतारा', 'दुख मोचन' आदि।

कहानी संग्रह : आसमान में चन्दा तेरे

खण्ड काव्य : 'भस्मांकुर'

निबंध-संग्रह : 'अन्नहीनम् क्रियाहीनम्'

अनुवाद : 'मेघदूत', 'विद्यापति की कहानियाँ', 'गीत गोविन्द' आदि।

पुरस्कार : साहित्य अकादमी पुरस्कार 1968 ई० मे **'पत्रहीन नग्नगाछ'** कविता संग्रह पर।

बिहार सरकार द्वारा 'शिखर सम्मान'

युग-प्रवर्तक प्रतिनिधि रचनाकार, प्रगतिवादी विचारक पृष्ठपोषक यात्री जी मैथिली साहित्यकेँ नव दशा-दिशा देलनि अछि। फक्कड़-घुमक्कड़ ओ अक्खर स्वभावक यात्री जी जन-जीवन सँ जुड़ल चेतनाकेँ प्रतिबिम्बित कयनिहार मैथिलीक प्रथम साहित्यकारक रूपमे विख्यात छथि।

काव्य-संदर्भ : प्रस्तुत कविताक माध्यमे कवि मिथिलाक माटि-पानि, लोक-वेद, मिथिला-मैथिल आदिसँ नीक परिचय करबैत छथि। एहि कवितासँ मिथिला ओ मैथिलक सम्बन्धमे उपजल भ्रांति स्वतः दूर भऽ जाइत अछि।

वन्दना

हे तिरहुत हे मिथिले ललाम !
मम मातृभूमि, शत-शत प्रणाम !
तृण तरु शोभित धन धान्य भरित
अपरूप छटा, छवि स्निग्ध-हरित

गंगा तरंग चुम्बित चरण
शिर शोभित हिमगिरि निर्झरण
गंडकि गाबथि. दहिना जहिना
कौशिकि नाचथि वामा तहिना

धेमुड़ा त्रियुगा जीवछक रेह
कमला वाग्मतिसँ सिक्त देह
अनुपम अद्‌भुत तव स्वर्णांचल
की की न फुलाए फड़ए प्रतिपल

जय पतिव्रता सीता भगवति
जय कर्म योगरत जनक नृपति
जय जय गौतम जय याज्ञवल्क्य
जय जय वात्स्यायन जय मंडन
जय जय वाचस्पति जय उदयन

गंगेश पक्षधर सन महान
दार्शनिक छला', छथि विद्यमान

जगभरि विश्रुत अछि ज्ञानदान
जय जय कविकोकिल विद्यापति
यश जनिक आइधरि सभ गाबथि
दशदिश विख्यापित गुणगरिमा
जय जय भारति जय जय लखिमा
जय जय जय हे मिथिलामाता
जय लाख लाख मिथिलाक पुत्र
अपनहि हाथेँ हम सोझराएब
अपना देशक शासनक सूत्र
बाभन छत्री ओ भुमिहार
कायस्थ सूँड़ि ओ रौनियार
कोइरी कुर्मी ओ गोंढ़ि-गोआर
धानुक अमात केओट मलाह
खतबे ततमा पासी चमार
बरही सोनार धोबि कमार
सैअद पठान मोमिन मीआ
जोलहा धुनिआँ कुजरा तुरुक
मुसहड़ दुसाध ओ डोम-नट्ट..

भल हो हिन्नू भले मुसलमान
मिथिलाक माटिपर बसनिहार
मिथिलाक अन्नसँ पुष्ट देह
मिथिलाक पानिसँ स्निग्ध कान्ति
सरिपहुँ सभ केओ मैथिले थीक
दुविधा कथीक संशय कथीक ?

ई देश-कोस ई बाध-बोन
ई चास-बास ई माटि-पानि
सभटा हमरे लोकनिक थीक
दुविधा कथीक संशय कथीक ?

जय जय हे मिथिला माता
सोनित बोकरए जँ जुअएल जोंक,
तँ सफल तोहर बर्छीक नोक!

खएता ने अयाची आब साग!
ककरो खसतैक किएक पाग ?
केओ आब कथी लए मूर्ख रहत ?
केओ आब कथी लए कष्ट सहत
केओ किअए हएत भुखेँ तबाह ?
केओ किअए हएत फिकरेँ बताह ?
नहि पड़ल रहत, भेटतैक काज!
सभ करत मओज, सभ करत राज!
पढ़ता गुनता करताह पास-
जूगल कामति, छीतन खबास
जे काजुल से भरि पेट खएत
ककरो नहि बड़का धोधि हएत
कहबओता अजुका महाराज
केवल कामेश्वरसिंह काल्हि
हमरालोकनि जे खाइत छी
खएताह ओहो से भात-दालि

अछि भेल कतेको युग पछाति
ई महादेश स्वाधीन आइ
दिल्ली पटना ओ दड़िभंगा
फहराइछ सभठाँ तिनरंगा
दुर्मद मानव म्रियमाण आइ
माटिक कण कण सप्राण आइ
नव तंत्र मंत्र चिन्ता धारा
नव सूर्य चन्द्र नवग्रह तारा
सब कथुक भेल अछि पुनर्जन्म
हे हरित भरित हे ललित भेस
हे छोट छीन सन हमर देश
हे मातृ-भूमि शत शत प्रणाम !!

●

शब्दार्थ — तृण = घास; तरु = गाछ; स्निग्ध = तेल लागल; सुन्दर, प्रिय; दुर्मद = मदमत्त; अपरूप = अपूर्व; शिर = माथ; चन्द्र = चन्द्रमा; विश्रुत = प्रसिद्ध; म्रियमाण = मृतप्राय ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. 'वन्दना' शीर्षक कवितामे कवि ककर वन्दना कयलनि अछि ?
2. कवि द्वारा देल गेल तिरहुतक चौहद्दीकेँ फरिछा कऽ लिखू ।
3. एहि पाठमे वर्णित जाति सभ मैथिल छथि ? कोना ? लिखू ।
4. परिश्रमक महत्त्व कवि कोन रूपेँ प्रदर्शित कयलनि अछि?
5. अयाची कोनठामक वासी छलाह ? हुनका प्रति प्रचलित पारस्परिक दृष्टिकोणक उल्लेख करू ।
6. प्रस्तुत पद्यमे वर्णित मिथिलाक महान व्यक्ति सभक नाम लिखू ।
7. मिथिलामे बसनिहार सभ जाति.....थिक।

गतिविधि :

1. एहि पाठमे नदी सभक नाम आयल अछि, तकरा लिखू।
2. मिथिलाक नदी सभक चर्चा आनो कवि कयलनि अछि ? स्मरण करू आ लिखू।
3. पुस्तकक अन्य पाठमे वर्णित मिथिलाक चौहद्दी दोसरो कवि-साहित्यकार देलनि अछि। ओकरा ताकू आ लिखू।
4. विशेषण ओ विशेष्यमे अन्तर स्पष्ट करू।

निर्देश :

(क) शिक्षकसँ अपेक्षा कयल जाइत अछि जे ओ जनक, याज्ञवल्क्य, वाचस्पति, गंगेश, पक्षधर, गौतम आदिसँ छात्रकेँ परिचित करयबाक चेष्टा करथि।

(ख) यात्रीजी एहि कवितामे सभ जातिक चर्चा कोन सन्दर्भमे कयलनि अछि? मिथिलाक पारम्परिक जाति-व्यवस्थाक आलोकमे तकर ज्ञान शिक्षक छात्रकेँ देथि।

(ग) यात्री कोन विचारधाराक कवि छलाह- शिक्षक तकर जनतब छात्रकेँ समकालीन साहित्यमे ओहि विचारधारासँ सम्बन्धित अन्य साहित्यकार लोकनिक आलोकमे देथि।

(घ) शिक्षक छात्रसँ प्रगतिवादक विषयमे चर्चा करथि।

□